संपादक का नोट

मैं आप सभी को मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम से अभिवादन करती हूं।

प्रभु की इच्छा को जानने के लिए हमें हमारे मन में बहुत स्पष्ट होना चाहिए कि हमारे जीवन में प्रभु की इच्छा क्या है। झील के दूसरी तरफ जाने के लिए, यीशु जानते थे कि यह उनके पिता की इच्छा है। लूका 8: 22–24 ''22 फिर एक दिन वह और उसके चेले नाव पर चढ़े, और उस ने उन से कहा; कि आओ, झील के पार चलें: सो उन्होंने नाव खोल दी। 23 पर जब नाव चल रही थी, तो वह सो गया: और झील पर आन्धी आई, और नाव पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे। 24 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा; हे स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैं: तब उस ने उठकर आन्धी को और पानी की लहरों को डांटा और वे थम गए, और चैन हो गया।'' .

ऐसी स्थिति पौलुस के जीवन में भी आई, लेकिन पौलुस परेशान था। वह सोच रहा था कि वे जीवित होंगे या मृत। प्रेरितों के काम 27: 18–20 ''18 और जब हम ने आंधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे। 19 और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज का सामान फेंक दिया। 20 और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।'' लेकिन प्रभु की इच्छा क्या थी? पौलुस को कैसर के सामने आना पड़ा, और जैसे तूफान यीशु को पार करने से रोक नहीं सका, उसी तरह यह पौलुस को रोक नहीं सका। प्रेरितों के काम 27: 22–25 ''22 परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की। 23 क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं, और जिस की सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। 24 हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है: और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। 25 इसलिये, हे सज्ज़नों ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।''

जब आप अपने जीवन में प्रभु की इच्छा को जानते हैं, तो आपका विश्वास बढ़ता है। इसके लिए आपको प्रभु के वचन को पढ़ना होगा और प्रभु के वचन में दृढ़ होना होगा ताकि आप

सांसारिक चिंताओं, सांसारिक पसंदों और सांसारिक इच्छाओं में न फंसें। बहुत से लोग सच्चाई नहीं जानते हैं और वे रोते हैं, अपना घर बदलते हैं, अपना कलीसिया बदलते हैं, आदि ... इसमें कोई लाभ नहीं है। उत्पत्ति 4: 6–7 ''6 तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है? 7 यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।'' सौ बार प्रभु से क्षमा माँगने के बजाय, हमेशा के लिये उनके सत्य को जानना बेहतर है। हम उनकी आँखों से बच नहीं सकते, क्योंकि उनकी आँखें हर जगह हैं – आपको चंगा करने के लिए, आपको क्षमा करने और आपको आशीर्वाद देने के लिए। इसलिए उस पर भरोसा रखो, क्योंकि वह विश्वास योग्य है।

प्रभु आपको आशीर्वाद दे ... हाल्लेलुयाह!

पास्टर सरोजा म.

अपने जीवन और घरों से पाप दूर करो!

भजन संहिता 118 : 15 ''धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है, यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है।'' प्रभु हमारे घरों को कैसे होने की आशा करते है? यह एक धर्मी घर होना चाहिए, घर का उद्धार होना चाहिए, यह एक प्रार्थना का घर होना चाहिए, जब लोग हमारे घरों को देखें तो उन्हें पता चलना चाहिए कि यह घर परमेश्वर के भय मानने वालों का घर है। हमारा घर अन्यजातियों के लिए एक उदाहरण होना चाहिए ताकि यह पता चल सके कि यह परिवार प्रभु से डरता है, और हमारा घर एक धन्य घर है। 1 शमूएल 9: 20 ''और तेरी गदहियां जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गईं। और इस्राएल में जो कुछ मनभाऊ है वह किस का है? क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है?'' प्रभु हमेशा हमारे घर की बातें करते है और वह चाहते है कि हमारा घर शुद्ध हो। याकूब ने अपने घरवालों और उनके साथ रहने वालों को क्या कहा? आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 35: 2 ''तब याकूब ने अपने घराने से, और उन सब से भी जो उसके संग थे, कहा, तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको ; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो।'' उसने उन्हें सभी अन्य देवताओं और मूर्तियों को अलग रखने के लिए कहा। हम सोचते होंगे कि हमारे घरों में कोई अन्य देवता या मूर्ति नहीं है। लेकिन प्रभु के लिए एक मूर्ति क्या है? जो कुछ प्रकृति हमारे भीतर है, वह प्रभु की दृष्टि में मनभावन नहीं है, वह एक मूर्ति है! यह याद रखना हमारे लिए ज़रूरी है। वह प्रकृति हमारे जीवन में लाभदायक नहीं है। भजन संहिता 51 सबसे अच्छा भजन संहिता है, जिसमें दाऊद 4 प्रकार की आत्मा के लिए रोता है। दाऊद ने पाप किया और कमजोर हो गया, उसका जीवन दुख और पीड़ा से भर गया, वह अकेला महसूस करता था। दाऊद ने प्रभु से अलग महसूस किया और खुद को एक जादू टोना करने वाले की तरह सोचा और प्रभु के प्रेम से बहुत दूर चला गया। दाऊद के लिए अपने जीवन में प्रभु की उपस्थिति के बिना एक पल भी रहना मुश्किल था। इस तरह **भजन संहिता 51 वचन 10, 11, 12, 14, 15** में दाऊद ने परमेश्वर की आत्मा से रोते हुए उसे प्रभु के प्यार की तह में वापस ले आए ऐसी प्रार्थना की। हममें से प्रत्येक के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने जीवन को बदलना बहुत महत्वपूर्ण है। जब हमें सुधारा जाता है, तो हमें सुधार और फटकार पसंद नहीं आता है। याद रखें, याकूब का घर और निवास मूर्तिपूजक नहीं था, फिर भी वह उन्हें सभी अन्य देवताओं को

अलग रखने और अपने घरों को साफ करने के लिए कहता है। यहाँ एक तुलना की गई है, वह हमारे घर की तुलना को हमारे शरीर से की गई है। हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, हमारे लिए खुद को जानना और उसे शुद्ध करना महत्वपूर्ण है, और यह समय खुद को शुद्ध करने का है। हमारे प्रभु परमेश्वर दरवाजे पर हर रोज खड़े होते हैं और दस्तक देते हैं, वह इंतजार कर रहे हैं की कब हम अपने शरीर को शुद्ध करेंगे और उन्हें हमारे जीवन में प्रवेश करने देंगे। वह कभी जबरन प्रवेश नहीं करेंगे या अशुद्ध घर में प्रवेश नहीं करेंगे। वह तभी प्रवेश करेंगे, जब हमारे भीतर पवित्रता होगी, जब हमारा शरीर प्रार्थनापूर्ण, धर्मी और पवित्र होगा। इस प्रकार, वह हमारे दरवाजे के बाहर इंतजार कर रहे है और दस्तक देते है, जो भी सुनेगा और दरवाजा खोलेगा, प्रभु अंदर प्रवेश करेंगे। प्रकाशितवाक्य 3: 20 ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।'' हां, प्रभु हर दिन हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहे है, जब हम उसे प्राप्त करने और दरवाजा खोलने के लिए तैयार हैं, तो वह अंदर प्रवेश करेंगे। प्रभु चाहते हैं कि हम खुद को विनम्र करें, हमें उनकी दृष्टि में धर्मी और पवित्र होना चाहिए, तभी जब हम दरवाजा खोलते हैं, प्रभु अंदर प्रवेश करेंगे। वह हमारे दोस्त बनना चाहते है। इस प्रकार, यदि हमारे जीवन में कोई बाधा है, तो वचन हमें चेतावनी देता है। आइए हम पढ़ते हैं व्यवस्थाविवरण 7: 26 ''और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उस से घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।'' हमें उन चीजों को पूरी तरह से अलग करना चाहिए जो हमारे जीवन में अभिशाप लाती हैं, हमें उसे पूरी तरह से अस्वीकार करना चाहिए और 'छी' का अर्थ 'अशुद्ध' कहना चाहिए। हमें अधर्म का खंडन करना चाहिए और उसे 'छी' कहना चाहिए। अधिकार के साथ हमें अपने जीवन से इस अभिशाप को झिड़कना चाहिए, ठीक उसी तरह जब यीशु लोगों को उपदेश दे रहे थे और लोगों ने कहा कि ''यह कौन है जो अधिकार के साथ बोलता है?'' वचन 'सत्य और जीवन' है, यह हमें पूरी तरह से काट देता है और हमें अपने जीवन में सभी अधर्म से अलग कर देता है।

हम आकान की कहानी जानते हैं, परमेश्वर ने इस्राएल सेना को बल और ताकत दी थी, परमेश्वर ने उन्हें उनकी हर लड़ाई में जीत दिलाई। लेकिन आकान की 'अशुद्ध गुणवत्ता' के कारण, यहोशू और इस्राएल की सेना युद्ध हार गई। यहोशू 7: 21 ''कि जब मुझे लूट में शिनार देश का एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ शेकेल चांदी, और पचास शेकेल सोने की एक ईंट देख पड़ी, तब मैं ने उनका लालच करके उन्हें रख लिया; वे मेरे डेरे के भीतर भूमि में गड़े हैं, और सब के नीचे चांदी है।'' इसी तरह यह गुण यानी अभिमान, अहंकार, ईर्ष्या, लोभ, यदि इनमें से कोई भी गुण हमारे भीतर है, तो हम आकान की तरह हो जाएंगे। हम आकान का अंत जानते हैं यहोशू 7: 25 ''तब यहोशू ने उस से कहा, तू ने हमें क्यों कष्ट दिया है?

आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा। तब सब इस्राएलियों ने उसको पत्थरवाह किया; और उन को आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्थर डाल दिए।'' यह दिन हमारे जीवन में कभी नहीं आना चाहिए। ऐसे में हमारे लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपने घर और जीवन से सारी गंदगी को हटा दें। हमारा घर प्रार्थना का घर होना चाहिए, धार्मिकता और पवित्रता का घर होना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारा प्रभु ऐसे घर और जीवन को हर दिन खोज कर रहे है। जब परमेश्वर हमारे जीवन और घरों में आता है, तो हम उसके साथ भोजन करेंगे और वह हमारे साथ, उस खुशी की कल्पना कीजिए जो हमारे घर में अनुभव होगा, तभी प्रभु के साथ हमारा रिश्ता आगे बढ़ सकता है। इस प्रकार, अगर हमारे भीतर या हमारे घर में ऐसा कोई गुण है, तो हमें उसे फटकारना चाहिए। आकान के भीतर इस घृणायोग्य गुणवत्ता के कारण, इस्राएल सेना युद्ध हार गई। अंत में, यहोशू ने लोगों को आदेश दिया कि वह उसे मार डाले। हमारा प्रभु भेदभाव करनेवाला परमेश्वर नहीं है, उनका वचन एक दोधारी तलवार है, यह हर जीवित मांस और रक्त के लिए समान है। यदि हम अपने जीवन को बेहतर के लिए बदल देते हैं, तो हम सदा उसके राज्य में परमेश्वर के साथ वास करेंगे। या फिर, प्रभु हमारे घर और हमारे जीवन को झिड़क देंगे। हमें पता होना चाहिए कि यह एक आशीर्वाद है जो परमेश्वर हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए देंगे और कहीं से खरीदा नहीं जा सकता है। हममें से प्रत्येक को परमेश्वर के साथ अंतिम निर्णय का सामना करने के लिए व्यक्तिगत रूप से खड़ा होना होगा। याद रखें, यदि दो हैं, तो एक ले लिया जाएगा और दूसरा वापस छोड़ दिया जाएगा। हम एक दूसरे की कृपा का अदला बदली नहीं कर सकते, हमें अपनी कृपा प्राप्त करनी चाहिए। हमारा परमेश्वर भेदभाव करनेवाला परमेश्वर नहीं है, वह एक धर्मी परमेश्वर है। नीतिवचन 10: 22 ''धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दु:ख नहीं मिलाता।'' प्रभु का प्यार हमारे जीवन में आशीर्वाद लाता है, वह इसमें कभी दुख नहीं जोड़ता है। लेकिन अगर हमें अपने जीवन में दु:ख है, तो हमें अपने घरों और अपने जीवन की जाँच करनी चाहिए, हमारे भीतर ऐसा कुछ हैं जो प्रभु को मंजूर न हो और हम उस पाप में जारी हैं जो प्रभु को पसंद न हो। हमें खुद को 'ज्योति और प्रभु के दीपक' में यानी वचन में जांचना चाहिए। आइए हम अपने जीवन की जाँच करें और उसे बदलें। हम जानते हैं कि शाऊल युद्ध के लिए गया था और वहाँ उसने अपने लिए अच्छे, स्वस्थ जानवरों को बचा लिया। लेकिन उसने झूठ बोला और कहा कि ''मैंने प्रभु को बलि देने के लिए अच्छे जानवरों को रखा है''। परमेश्वर हमसे क्या चाहते है हमारे बलिदान या आज्ञाकारिता को ? प्रभु जीवन में केवल हमारी आज्ञाकारिता चाहते हैं। प्रभु के लिए हमारे किए गए कुर्बानियाँ कोई मान्य नहीं रखती है, हमारे बलिदानो में कोई आशिष नहीं है, प्रभु उसकी परवाह नहीं करते है। एक घर और जीवन जिसमें प्रभु के लिए आज्ञाकारिता है, वह प्रभु के लिए एक पवित्र और शुद्ध निवास स्थान बन जाता है। एक घर और जीवन जो आज्ञाकारिता के साथ प्रभु के लिए एक प्रार्थनापूर्ण और धर्मी घर बन जाता है। हम जानते हैं

कि यूसुफ मिस्र के घराने में आशीर्वाद लाया था। आइए हम पढ़ते है उत्पत्ति 39: 5 ''और जब से उसने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था, सब पर यहोवा की आशीष होने लगी।'' यूसुफ को अपने ही घरवालों से नफरत मिली, और आखिरकार उसके परिवार द्वारा उसे मरने के लिए एक गड्ढे में फेंक दिया गया था। लेकिन हम जानते हैं कि प्रभु ने उसे कैसे उठाया और अंत में उसे सभी के लिए एक आशीर्वाद बना दिया, जिसके लिए उसने प्रार्थना की। इसकी वजह यह थी कि युसूफ प्रार्थना का मनुष्य था और याकूब एक 'आज्ञाकारी' व्यक्ति था।। याकूब और यूसुफ, परमेश्वर की दृष्टि में दोनों धर्मी थे और उन्हें परमेश्वर का भय था। हम कॉर्नेलियस की कहानी जानते हैं, वह एक प्रभु से डरनेवाला इंसान था। आइए हम पढ़ते हैं प्रेरितों के काम 10 : 2 ''वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लागों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।'' कॉर्नेलियस का घर स्वर्ग जैसा था, यह एक प्रभु का भय मानने वाला घर था। यह यीशु के लहू से छिपा हुआ था। हम 'यीशु के लहू' से अपने घर और जीवन को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं? उनकी कृपा प्राप्त करके, उनके लिए अच्छे काम करके, उनसे भयभीत होकर, इस प्रकार हम अपने घर और जीवन को 'यीशु के लहू' के छत्र छाया में छिपा सकते हैं । निर्गमन 12: 13 ''और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा; अर्थात मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊंगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे।'' हाँ, यहां तक कि अगर हमारे घर और जीवन को भी यदि यीशु के लहू से छिपाया गया हो, तो जब विनाश का दूत आएगा, तो यह हमारे घर और जीवन को नहीं छू पाएगा। पवित्र शास्त्र में, हम जानते हैं कि एक ऐसा देश था जिसमें उन सभी घरों को नष्ट करने के लिए विनाश का स्वर्गदूत भेजा गया था जिनके दरवाजे पर 'यीशु के लहू' का चिन्ह नहीं था। परमेश्वर ने इस्राएलियों को, उनके लोगों को, उनके घरों की चौकी के बाहर मेमने का लहू डालने की आज्ञा दी थी। इस चिन्ह को देखकर, विनाश का स्वर्गदूत उनके घरों को नष्ट नहीं करेगा । इसी तरह इस्राएलियों ने भी ऐसा ही किया और विनाश के स्वर्गदूत से बच गए। जिन घरों में दरवाजे की चौखट पर मेमने का लहू नहीं था, वे नष्ट हो गए। हमारे जीवन में भी, हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने घरों और जीवन को 'यीशु के लहू' से बचाएं। इस प्रकार, हमारे घरों में पवित्रता होनी चाहिए, हमारे घर प्रार्थना का घर होना चाहिए और हम सभी को परमेश्वर से डरना चाहिए। चाहे हमारा घर हो या हमारा जीवन, हमें पवित्र, धर्मी और परमेश्वर से डरना चाहिए। इस प्रकार, प्रभु हमारे घरों, हमारे परिवारों और हमारे जीवन का ख्याल रखेंगे, क्योंकि वे सभी उनके हैं। प्रभु हमारे घरों और जीवन में जबरन प्रवेश नहीं करते हैं। इसके बजाय, जो कोई उन्हें पुकारे और उन्हें विश्वास में बुलाए ''प्रभु मुझे चंगा कर, प्रभु मुझे आशीर्वाद दें, प्रभु मेरा दर्द और दु:ख दूर कर, सभी धन्य हैं और बच गए हैं। इस

प्रकार, हमें उसकी ओर जाने और पूछने के लिए पहला कदम उठाना होगा, वह निश्चित रूप से हमारा सम्मान करेंगे। हमें उससे पहले जानना चाहिए की, हमें ईमानदारी से उस पर विश्वास करना चाहिए और भरोसा करना चाहिए कि वह हमारे जीवन में चमत्कार कर सकतें है। हमें उससे पहले खुद को नम्र करना चाहिए। हमारा प्रभु हमसे दूर नहीं है, वह अपने चुने हुए बच्चों के बीच में है। 40 वर्षों तक परमेश्वर जंगल में इस्राएलियों के साथ थे। प्रभु लगातार उनके रोने की आवाज सुन रहे थे और उनकी प्रार्थना का जवाब दे रहे थे। प्रभु आज भी हमारे साथ हैं। अगर हमारे भीतर भी ऐसी कोई नकारात्मक प्रकृति है, तो हमें बदलना चाहिए। भविष्य का समय, वास्तव में हमारे जीवन में कठिन होने वाला है। इसलिए, प्रभु आज भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहे है, वह हमें चेतावनी दे रहे है कि विनाश का स्वर्गदूत जल्द ही आ जाएगा, लेकिन जब हम उसके बच्चे हैं, तो विनाश के दूत को हम में से एक को भी छूने का कोई अधिकार नहीं होगा। प्रभु हमसे पूछ रहे हैं ''आज अपने दिल खोलो, आज अपने दरवाजे खोलो, धार्मिक और पवित्र हो जाओ और लगातार प्रार्थना में रहो।'' भजन संहिता 91: 5–6 ''5 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है, 6 न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है।'' जब प्रभु दुनिया में विभिन्न प्रकार की बीमारी भेजेंगे, जब विनाश के दूत विनाश के लिए आते हैं, तो हमें डरने की आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे घरों और हमारे जीवन के रक्षक होंगे। विनाश के दूत को हमारे घरों और जीवन में अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रकाशितवाक्य 12: 11 ''और वे मेम्ने के लहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली।'' यह सच्चाई है, हम परमेश्वर के वचन के आगे कुछ भी नहीं हैं। वचन एक ही समय में दो धारी तलवार और एक हथौड़ा है। यह हमें तभी तोड़ सकता है जब हम इसे हमें तोड़ने दें। अपनी महानता और भलाई के द्वारा हम कभी भी परमेश्वर के साथ विजय प्राप्त नहीं कर सकते हैं, यह केवल हमारे साक्षी और गवाही के द्वारा, यीशु का लहू है जिससे हम विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, हमारे घर और हमारे जीवन को यीशु के लहू से छिपने की आवश्यकता है। विनाश का स्वर्गदूत हमारे घर और जीवन को पार करके जाएगा क्योंकि 'वह' जो हमारे भीतर है अर्थात् प्रभु, वह उससे भी बड़ा है जो इस दुनिया में है। शत्रु का काम हमारे जीवन में दुख और दर्द लाता है, हमारे विश्वास को कमजोर करता है। याद रखें, हमारा काम प्रभु के प्रति आज्ञाकारी होना है, न कि उसके लिए बलिदान करना। बाइबल में भजन संहिता 119 में, दाऊद कहता है कि शत्रु ने उसके खिलाफ विभिन्न चीजों की योजना बनाई, लेकिन प्रभु के वचन, प्रेम, लहू, प्रकाश और अनुग्रह से, उसने इन सभी परेशानियों में जीत हासिल की। हमारा जीवन भी दाऊद के समान है, हर समय शत्रु हमारे नाश की योजना बना रहा है, वह हमारे ऊपर देख रहा है कि किसी को भी जीवन में समृद्ध नहीं होने देना चाहिए। लेकिन हमारा प्रभु एक महान प्रभु है, जब एक दरवाजा बंद होता है तो

वह हमारे लिए 10 नए दरवाजे खोल देते है। अगर पापी के रूप में उसने हमें इतना प्यार दिखाया है, तो प्रभु अपने धर्मी बच्चों से कितना प्यार करेंगे ! आइए हम इस सच्चाई पर विचार करें। लेकिन मूर्ख इस बात को कभी नहीं समझ पाएंगे, क्योंकि उनके घुटने प्रभु के आगे नहीं झुकते हैं। यह केवल तब होता है जब हम विनम्र हो जाते हैं कि हम दूसरों के दर्द को महसूस कर सकें और उनका समर्थन कर सकें। इस तरह का घर और जीवन अंधकार और व्यर्थता का घर और जीवन है। ऐसे घर प्रभु से किसी भी अच्छाई की उम्मीद नहीं कर सकते।

राहाब एक वेश्या थी। उसके पास प्रभु का रहस्योद्घाटन जानने का समर्थ था, उसने अपने घर में प्रभु के लोगों की रक्षा की और प्रभु के लिए यह अच्छा काम किया। इस प्रकार, वह और उसके घरवाले बच गए। आइए हम पढ़ते हैं यहोशू 2: 18, 22 ''18 तुम, जब हम लोग इस देश में आएंगे, तब जिस खिड़की से तू ने हम को उतारा है उस में यही लाल रंग के सूत की डोरी बान्ध देना; और अपने माता पिता, भाइयों, वरन अपने पिता के घराने को इसी घर में अपने पास इकट्ठा कर रखना। 22 और वे जाकर पहाड़ तक पहुंचे, और वहां खोजने वालों के लौटने तक, अर्थात तीन दिन तक रहे; और खोजने वाले उन को सारे मार्ग में ढूंढ़ते रहे और कहीं न पाया।'' राहाब ने सुरक्षित रूप से प्रभु के लोगों को अपने घर में रखा और उन्हें दुश्मनों से बचाया। जब वे चले गए, तो उन्होंने उसे अपनी खिड़की पर एक लाल रंग की तार बाँधने की सलाह दी, जिससे वे नीचे उतर गए। इस प्रकार, जब वे इस भूमि को नष्ट करने के लिए वापस आए, तो खिड़की पर बंधे लाल तार को देखकर, उन्होंने उसके घर को नष्ट नहीं किया। इस प्रकार, उसका पूरा घर बच गया। लाल रंग का तार 'यीशु के लहू' को दर्शाता है और यह लहू है जिसने उसके घर को बचाया है। हमारे घर कैसे होने चाहिए? राहाब के इस घर की तरह, जिसकी खिड़की पर एक लाल रंग के तार से बंधा हुआ था, हमें अपने घर को यीशु के 'लहू' से ढंकना चाहिए। राहाब को अपने अंदर प्रभु का भय था, वह शायद पहले भी परमेश्वर को नहीं जानती था, लेकिन जब उसने प्रभु के आदमियों को बचाने के लिए रहस्योद्घाटन प्राप्त किया, तो वह प्रभु की इस आज्ञा का 'आज्ञाकारी' हुई और प्रभु के इच्छा के अनुसार किया। इस प्रकार, उसके पूरे घर को बचाया। नूह ने अपने परिवार को बचाने के लिए क्या किया। इब्रानियों 11: 7 ''विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज बनाया, और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है।'' वह परमेश्वर की आज्ञा और विश्वास में आज्ञाकारी था और उसने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एक जहाज़ बनाया। इस प्रकार उसके परिवार को विनाश से बचाया। हमें याद रखना चाहिए, उस समय के लोगों ने कभी नहीं देखा था कि बारिश क्या है? फिर भी नूह ने केवल परमेश्वर पर विश्वास किया और अपने परिवार के लिए एक जहाज़ बनाना शुरू किया। नूह परमेश्वर से डरने वाला और परमेश्वर की आज्ञा का

पालन करने वाला व्यक्ति था। परमेश्वर ने नूह से जहाज़ को रंगने के लिए क्या कहा। आइए हम पढ़ते है उत्पत्ति 6: 14 ''इसलिए तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले, उस में कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना।'' परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार, नूह ने परमेश्वर के विशेष वर्णन के अनुसार जहाज़ बनाया। प्रभु ने उसे जहाज़ के अंदर और बाहर लाल रंग से रंगने की सलाह दी। ताकि वह और उसका परिवार बच जाए। इसी तरह प्रभु भी हमें अपने घर और जीवन को यीशु के लहू से सुरक्षित करने के लिए कहते हैं। प्रभु ने हमारे लिए अपना शरीर और लहू दिया है। वह वचन है जो परमेश्वर से उतर के आएं है, यदि हम वचन को स्वीकार करते हैं, तो हमारा घर और जीवन बच जाएगा। नूह ने परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए विशेष वर्णन के अनुसार जहाज़ का निर्माण किया, साथ ही उसने उसे अंदर और बाहर दोनों ओर से लाल रंग से रंगा। परमेश्वर हम पर अनुग्रह करते है जैसे वह नूह के साथ थे। वह आज भी हमें उसी तरह बचाना चाहते है, जिस तरह नूह और उसके परिवार को बचाया गया था। हमारे प्रभु ने नूह से बात की क्योंकि वह परमेश्वर से डरने वाला और धर्मी व्यक्ति था। जब परमेश्वर हमारे बारे में भी बोलते है, तो हमें उनका आभारी होना चाहिए कि उसकी नजर हमेशा हम पर है, क्योंकि वह हमसे प्यार करता है और हम हमेशा उसकी दृष्टि में हैं। हर सुधार, सलाह और दृढ विश्वास हमें प्रभु से मिलता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि वह हमसे बहुत प्यार करता है और उसकी नज़र हम पर है। हम उससे कुछ भी नहीं छिपा सकते हैं। नूह के समय में दुनिया भर में हजारों लोगों के बावजूद, परमेश्वर ने तब भी केवल नूह और उसके परिवार को बचाने के लिए चुना। इसी तरह, आज, यदि हम सुधार प्राप्त करते हैं, तो इस पूरी दुनिया में हजारों लोगों के बीच में, तो हमें खुद को धन्य मानना चाहिए कि प्रभु हमसे प्यार करता है और उसकी आँखें हमेशा हम पर होती हैं।

पवित्र शास्त्र में प्रभु दो प्रकार के घर के बारे में बताते हैं। एक घर चट्टान पर और दूसरा रेत पर बनाया गया था। हालांकि दोनों घर एक जैसे दिखते थे, जब तूफान आया, तो चट्टान पर बनी धार्मिकता का घर मज़बूत था और इस तूफान का सामना कर सका। दूसरी ओर, रेत पर का घर ढह गया और नष्ट हो गया। इसलिए, परमेश्वर ने हमें अपनी आत्मा के ज़रिए कई बार सही किया होगा, हमें मज़बूत करने और प्रभु का डर अपने भीतर रखने के लिए। हमें पता होना चाहिए कि जो घर चट्टान पर बना है, वह कोने का पत्थर प्रभु है। आइए हम पढ़ते हैं 1 कुरिन्थियों 10: 4 ''और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उन के साथ–साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था।'' इस प्रकार, जब विनाश का स्वर्गदूत आता है, तब भी वह इस घर को नहीं छू सकता क्योंकि परमेश्वर कोने का पत्थर है। आइए हम पढ़ते हैं मत्ती 7: 24 – 27 ''24 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। 25 और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नेव चट्टान पर डाली गई थी। 26 परन्तु जो कोई मेरी ये

बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। 27 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।'' अंत समय में, यदि हमारा घर और जीवन प्रार्थनापूर्ण, धर्मी, और प्रभु का भय रखनेवाला नहीं है, तो जब तूफान आएगा और बुरे हमले होंगे, तो हम झटके नहीं झेल पाएंगे। आज, हम सभी एक जैसे दिखते हैं, हम उसी पवित्र मंदिर के मण्डली हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि जो घर और जीवन 'चट्टान' के रूप में यानी प्रभु जो कोने के पत्थर है, वह जीवित रहेगा। वही तूफ़ान अगर घर और रेत से बनी ज़िन्दगी से टकराता है तो वो उस झटके से बच नहीं पाएगा, नष्ट हो जाएगा। प्रभु हमसे बहुत प्यार करता है, कि हम उसका पूर्ण, उत्तम और पवित्र जीवन जिए, वह आज भी हमसे बात करता है। वह हमें वचन और उसकी आत्मा के माध्यम से सच्चाई दिखाता है, दोनों घर और जीवन अच्छे और बुरे, यह हमें चुनना है। वह एक जबरदस्ती करनेवाला प्रभु नहीं है, जो चुनाव हम करते हैं वह हमारे हाथ में रह गया है। आज, उसने दोनों घरों को हमारे सामने रखा है, भले ही भारी तूफान, बारिश, पानी आ जाए, यह इस घर को नहीं छू सकता है, क्योंकि प्रभु इस घर और जीवन का कोने का पत्थर है। लेकिन अगर प्रभु हमारे साथ नहीं है, तो भारी तूफान, बारिश, पानी आसानी से हमारे घरों और जीवन को नष्ट कर देंगे।

यदि हमारे पास कान है, तो हम यह सुनें कि आत्मा कलीसिया से क्या कहती है। यदि हम बदलने के लिए तैयार हैं, तो प्रभु हमें बदलने में मदद करेंगे। यह संदेश हमारे जीवन में आशीर्वाद लाए। प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म.